श्री शांतिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छन्द)

उध्र्व लोक के अग्रभाग पर, रहते हो त्रिभुवननामी।
सात राजू दूरी पर स्वामी, दूर रहूँ मैं भवगामी।।
प्रभु आप और बीच हमारे, आज बहुत ही दूरी है।
आप वीतरागी मैं रागी, श्रद्धा बंधन डोरी है।।
वचनों में नहीं शक्ति प्रभु जी कैसे आज बुलाऊँ मैं।
भाव भक्ति मेरी सुन लेना, शांति जिनेश पुकारूँ मैं।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज–पाँचों मेरु असि.....)

शुद्धातम का शुद्ध नीर श्रद्धाझारी में भर लाया।
प्रभु दर्श करते ही मिथ्यातम का अंतिम दिन आया।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिनवर चरणों मे, स्वभाव जल पाने आया।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि भवाताप से, दुःख अनंत सहा करता।
निज चौतन्य सदन में प्रभुवर, क्रोधानल धू–धू जलता।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिनवर चरणों में, शीतलता पाने आया।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हीरा मोती माणिक आदि, अक्षत लेकर आया हूँ।
राग–द्वेष बंधन मिट जाये, यही भावना लाया हूँ।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिन चरणांबुज में, अक्षय पद पाने आया।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्..... ।

निजानंद पुष्पित बगियाँ में, प्रभु विहार नित करते हो।
अपनी ही फुलवारी में निज, ब्रह्म रूप रस पीते हो।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, कामजयी होने आया।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धा रस से भरा हुआ, नैवेद्य समर्पित करता हूँ।
निजानुभव से तृप्त प्रभु की, वीतरागता वरता हूँ।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिनवर चरणों में, शुचिमय चरु पाने आया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति विरक्त होकरजिन मेरे, आप निरखते निज निधियाँ।
रत्नदीप से करूँ आरती, मेरी भी खोलो अखियाँ।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, परम ज्योति पाने आया।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आपके सिद्धमहल में, ज्ञान धूप घट जलते हैं।
अतः कर्म के कीट पतंगे, दूर-दूर ही रहते हैं।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, शुद्धि धूप पाने आया।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
मम श्रद्धा मंडप में आओ, मुक्ति का उत्सव कर दो।
फल लाया हूँ प्रभु चढ़ाने, एक नजर मुझ पर कर दो।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, मुक्तिरमा वरने आया।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
बिन श्रद्धा के नाथ हजारों, मैंने अर्घ्य चढ़ाये हैं।
दिखा दिखाकर इस दुनिया को,धर्मी भी कहलाये हैं।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, मुक्तिरमा वरने आया।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

भादों वदी सप्तमी आई, कुरुवंश में खुशियाँ छाई।
छप्पन दिक् देवी आई, माता ऐरा हर्षाई।।
नृप विश्वसेन अर्चित है, प्रभु के कारण चर्चित है।
सर्वार्थसिद्धि तज आये, इंद्रों ने रत्न बरसाये।।1।।
ॐ हीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वदी जेठचतुर्दशी आई, जन्मे त्रिभुवन जिनराई।
सब जग में आनंद छाया, सुर गिरि अभिषेक कराया।।
हस्तिनापुर नगरी प्यारी, प्रभु तीन पदों के धारी।
अतिशय दश है सुखकारी, जय शांतिनाथ त्रिपुरारि।।2।।
ॐ हीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु जातिस्मरण हो आया, वैराग्य सहस मन भाया।
छह खंड राज को छोड़ा, विष भोगों से मुख मोड़ा।।
सिद्धार्थ पालकी चढ़के, सु आम्रवनी में पहुँचे।
लौकांतिक शीश नवाय, मुनि शांतिनाथ गुण गाये।।3।।
ॐ हीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बैठे नंदी तरु नीचे, फिर ज्ञान गगन में पहुँचे।
सुदी पौष तिथि दशमी को, उपदेश दिया भवि जन को।।
खिरी समवसरण में वाणी, गणधर गूँथी कल्याणी।
दश केवलज्ञान के अतिशय, प्रभु शांतिनाथ की जय-जय।4।।
ॐ हीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब जेठ वदी चौदस थी, तब पाई शिव लक्ष्मी थी।
संग नौ सौ थे मुनिराया, गिरि कूट कुंदप्रभ भाया।।
प्रभु अष्टम वसुधा पाये, हम भी शिव आस लगाये।
सम्मेद शिखर की जय-जय,श्री शांतिनाथ की जय-जय।।5।।
ॐ हीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

दोहा

जिन शासन के दीप को, प्रभो शांत अवधूत।
मान मात्र से शांति हो, पाऊँ शांत स्वरूप।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

शांति विधायक शांति जिनेश्वर, नगर सुरपति से वंदित हैं।
सेलहवें तीर्थंकर स्वामी, तीन लोक में पूजित हैं।।
द्वादश कामदेव चक्रीश्वर, पंचम पद के धारी हैं।
बलपने से अणुव्रत धारी, प्राणी मात्र हितकारी हैं ।।2।।
छह खंडों के अधिपतियों को, शीघ्र आपने जीत लिया।
चक्र दिखाकर मात्र पुण्य से, चक्री का नहीं मान किया।
नव निधि चौदह रत्न प्राप्त कर, धर्मादि पुरुषार्थ कियां
जाति स्मरा जब हुआ आपको, राज तजा वैराग्य लिया।3।।
रत्नत्रय साधन के द्वारा, तुमने जिनपद राज किया।
चक्रवर्ती की अतुल निधि का, सहज भाव से त्याग किया।।
मंदरपुर के नृप सुमित्र ने, भक्ति से आहार दिया।
क्षीरधार मुनि कर में देकर, शिवपथ को पहचान लिया।।4।।
क्षपक श्रेणी आरूढ़ हुये तब, केवलज्ञान प्रकाश हुआ।
विचरण करके देश-देश में, मोक्षमार्ग उपदेश दिया।।
राज्य दशा में चक्ररत्न के, भय से नृप ने नमन किया।
प्रगट हुई चिद्रूप दशा तो, श्रद्धा से तव शरण लिया।।5।।
श्रीसम्मेद शिखर पर स्वामी, शुक्लध्यान आसीन हुये।
कूट कुंदप्रभ पुनीत धरा से, सिद्धक्षेत्र में पहुँच गये।।
अहो भाग्य है मेरा प्रभुवर, दर्श करूँ दो नयनों से।
शांति जिनेश्वर का गुण गाऊँ, तन से मन से वचनों से।।6।।
शांतिनाथ जगदीश्वर स्वामी, मुझको भी ऐसा वर दो।
अनुकूल प्रतिकूल योग में, समता हो ऐसा कर दो।।
प्रभु आपके चरण पखारूँ, मिथ्या तिमिर विनाश करूँ।
तीर्थंकर पद वंदन करके, पंच पाप मल नाश करूँ।।7।।
शांतिनाथ प्रभु का दर्शन कर, सम्यग्दर्शन प्राप्त करूँ।
शांति विधाता का सुमिरण कर, सम्यग्ज्ञान प्रकाश वरूँ।।
शांतिनाथ मूरत अर्चन कर, सम्यग्चारित हृदय धरूँ।
विघ्न विनाशक चरण चित्त धर, बारंबार प्रणाम करूँ।।8।।
श्री जिनवर का सुयश गान कर, शाश्वत मुक्तिधाम वरूँ।
शांति जिनेश मोक्ष पद दाता, परम शांत रस पान करूँ।।
करुणासागर चरणांबुज का, दर्शन कर भव भार हरूँ।
प्रभु आपके पथ पर चलकर, भव समुद्र को पार करूँ।।9।।

दोहा

शांति प्रभु के चरण को, चित् सिंहासन धार।
श्रद्धा द्वीप उजाल कर, ध्याऊँ बारंबार।।10!!

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

श्री शांति जिनेशा, भविजन ईशा, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।